श्रीसीतारामकृपाकटाक्षस्तोत्रम्

प्रकाशन केन्द्र
पोस्ट आफिस : महानगर, सीतापुर रोड,
लखनऊ—6

दो शब्द

भक्तवृन्द,

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद॥

हे नारद, मैं वैकुण्ठ में तथा योगियों के हृदय में भी (वैसा) निवास नहीं करता हूँ, (जैसा कि) मेरे भक्त लोग जहाँ गायन करते हैं वहाँ निवास करता हूँ।

भगवान् के श्रीमुखारविन्द से उच्चारित उक्त वाक्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि भक्त लोग जहाँ भगवान् के गुणानुवाद करें, स्तुति करें नाम संकीर्तन करें वहीं वे निवास करते हैं। ऐसी स्थिति में नये-नये स्तोत्रों द्वारा भगवान को जितनी सरलता से प्रसन्न किया जा सकता है कि उतनी अन्य साधनों से नहीं। इसके प्रमाणस्वरूप ध्रुव, गजेन्द्र आदि ही हैं, जिनके द्वारा स्तोत्रों से स्तुति करने पर भगवान् ने सद्यः उनकी मनः कामनायें पूरी की। अतएव इस दुष्काल कलिकाल में भी स्तोत्रों से भगवान् को प्रसन्न अवश्य किया जा सकता है।

यही सोचकर आज से कुछ वर्ष पहले ही श्री लता जी ने भगवत्प्रीत्यर्थ [illegible] स्तोत्रों को छन्दोबद्ध कर दिया था। किन्तु उन्हें जनता तक पहुँचाने का काम उनके लिए अशक्य हो रहा था। इस अशक्यता को दूर करने के लिये करुणावरुणालय भगवान् ने ही अपने एक भक्त श्री पद्मधर मालवीय को प्रेरणा दी। उन्होंने अपनी सहज सौम्य एवं आशुतोष प्रकृतिवश इन लघु स्तोत्रों को प्रकाशित कर जनता-जनार्दन के हाथ में पहुँचाने का भार अपने ऊपर ले लिया। इसके लिये मैं मालवीय जी को साधुवाद एवं धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी वे ऐसे सत्कर्मों द्वारा लोकोपकार करते रहेंगे।

श्री सीताराम विवाहपञ्चमी
संवत् २०३३

साधुपादपद्मप्रणत
तारिणीश झा
६३ मीरागली
दारागंज
प्रयाग

श्रीसीतारामकृपाकटाक्षस्तोत्रम्

१. श्रीजानकीकृपाकटाक्षस्तोत्रम्

जयोद्भवादिवर्जिते ! सखीनिकायसेविते !
स्वभावविश्वरञ्जिनि ! प्रियप्रमोदकारिणि !
शरत्सुधाकरानने ! स्थिते ! प्रमोदकानने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥१॥

शरद् ऋतु के पूर्ण चन्द्रमा के समान परम प्रकाशमय, आह्लादवर्द्धक श्रीमुखारविन्द वाली हे श्री किशोरी जी ! वस्तुतः न आप का कभी जन्म हुआ है न युवा-अवस्था ही आई है और न कभी अन्त ही होगा तथापि भक्तों को सुख देने के लिये आप श्री मिथिला जी में प्रकट होकर श्री अयोध्या जी में युवा अवस्था को प्राप्त हो करके श्री प्रमोद वन में विराज कर सखी समुदाय से सेवित होती हुई प्राणवल्लभ श्री रघुनन्दन प्यारे को महान् प्रमोद और सारे विश्व को स्वभाव से ही सुख प्रदान करने वाली हैं। अतः आप की जय हो। आप मुझको कब अपने कृपाकटाक्ष का पात्र बनाने की कृपा करेंगी ?

नमामि पादपल्लवं भवाम्बुनाथसुप्लवं
रमाशिवादिसेवितं भजज्जनैकजीवितम् ।
महामुनीन्द्रवन्दितं त्वदीयमीप्सितप्रदं
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥२॥

भव-सागर से पार करने के लिये जो सुदृढ़ जहाज के समान हैं, श्री लक्ष्मी जी श्री पार्वती जी आदि महा शक्तियाँ जिसकी सेविका हैं, जो भजन करने वाले भक्तों का परम जीवन है, महामुनिराज वृन्द जिसको सदा प्रणाम

करते हैं, जो सभी इच्छित कामनाओं को प्रदान करने वाला है; मैं आप के उस श्रीचरणकमल को प्रणाम करता हूँ। हे श्री किशोरी जी! कब आप मुझको अपने कृपाकटाक्ष की प्राप्ति का पात्र बनाने की कृपा करेंगी ?

चराचरात्मकं जगत्त्वदीययाल्पलीलया
सदैव सृज्यते तथाऽनुपाल्यते विलीयते।
जगन्मृषासुखेच्छया चिरात्मनः पराङ्मुखं
कदा कारिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम ॥३॥

हे श्री किशोरी जी! आप के साधारण खेल मात्र से इस अनन्त स्थावर जङ्गम मय जगत् का सदा ही सृजन, पालन तथा संहार होता रहता है, मैं संसार के झूठे नाशवान् सुख की लोलुपता वश होकर आप से बहुत काल से विमुख हूँ ऐसी अवस्था में मुझ पतित को उसी सर्व-समर्थ लीला शक्ति के द्वारा कब आप अपने कृपाकटाक्ष का पात्र (अधिकारी) बनाने की कृपा करेंगी ?

अखण्डभूतिसौभगप्रभुत्वबोधवारिधे!
यशोनिधिः सुखाम्बुधिस्त्वमेव भक्तवत्सले।
गतोपमा निरुत्तमा गतिः समस्तदेहिनां
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥४॥

हे दीनवत्सले श्री किशोरी जी, आप ही सम्पूर्ण वैभव, सम्पूर्ण सौन्दर्य, सम्पूर्ण प्रभुता तथा सम्पूर्ण ज्ञान की सागर, सम्पूर्ण यश की भाण्डार व सम्पूर्ण सुख की समुद्र एवं समस्त देहधारियों की सब से श्रेष्ठ उपमा रहित आधार हैं सो आप सर्वसाधनहीन मुझ दीनहीन को कब अपने कृपाकटाक्ष की प्राप्ति का पात्र बनाने की कृपा करेंगी ?

अनन्तदोषविग्रहो न कोऽपि साम्यमेति मे
न नास्तिको ममोपमो न पात्रमस्ति धिक्कृते: ।
न मत्समोऽघसागरो भवादृशी क्षमानिधि:
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥५॥

हे श्री किशोरी जी, अनन्त दोषों का स्वरूप भी कोई प्राणी मेरी बराबरी नहीं कर सकता, क्योंकि मेरे समान न कोई नास्तिक ही है और न धिक्कार का पात्र, न पापों का समुद्र ही, पर आप के समान कोई क्षमा का भाण्डार भी तो नहीं है, इसलिये आप मेरे समस्त अवगुणों की उपेक्षा करके मुझे कब अपने कृपाकटाक्ष की प्राप्ति का पात्र बनाने की कृपा करेंगी ?

उपासिताङ्घ्रिपङ्कजे जितेन्द्रियात्मसत्तमै–
र्विदेहराजवल्लभा सदानुरागपालिते !
निरस्तसर्वसाधनं त्वदङ्घ्रिमूलमागतं
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥६॥

इन्द्रिय-मन-विजेता-शिरोमणि परम हंस लोग जिनके श्री चरण कमलों की सदा उपासना करते हैं, श्री विदेहराजवल्लभा महारानी श्री सुनयना अम्बा जी बड़े अनुराग पूर्वक जिनका सदैव पालन करती हैं, ऐसी हे श्री किशोरी जी ! आप के श्री चरणों में आये हुये, सब साधनहीन मुझ दीन को कब आप अपने कृपाकटाक्ष की प्राप्ति का अधिकारी बनाने की कृपा करेंगी ?

अनन्तजन्मसु ध्रुवं त्वमेव मामकेष्वहो
सदैव पालनावनादिकर्मतत्पराऽभव: ।
उपेक्ष्य तां गतिप्रदां भजन्तमन्यमज्ञकं
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥७॥

हे श्री किशोरी जी ! मेरे अनन्त जन्म हुये। उन सभी में आप ही मेरे पालन व रक्षण कार्य में माता-पिता, पति-पत्नी, पुत्र, गुरु, शिष्य, मित्रादि अनेक रूपों से सदा तत्पर बनी रहीं। उन अपनी गति-प्रदायिनी आप की ही उपेक्षा करके मैं दूसरे व्यक्ति का भजन करता हूँ, ऐसे मुझ मूर्ख को भी कब आप अपनी कृपा-कोर प्राप्ति का पात्र बनाने की कृपा करेंगी ?

विहाय धामवैभवं सुखं चिदात्मकं परं
प्रदित्सया शरीरिणां यया निजानुकम्पया।
नृलोकमाप्तवत्यहो तथा विलम्बवर्जितं
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥८॥

हे श्री किशोरी जी ! प्राणियों को दिव्य सुख प्रदान करने की इच्छा से आप जिस अपनी सहज अनुकम्पा से दिव्य धाम के वैभव को छोड़ कर इस मनुष्य लोक में पधारी हैं, उसी कृपा से द्रवित हो कब आप मुझको अपने कृपा-कटाक्ष की प्राप्ति का पात्र बनाने की कृपा करेंगी ?

अनन्तकालतो गता स्मृतिस्तवामृतोपमा
तयोज्झितैः सुधा विषं विषं सुधानुभूयते।
त्वमेव सर्वदेहिनां पराम्बिकेति कथ्यते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥९॥

हे श्री किशोरी जी ! अमृत के समान जो आप की स्मृति थी वह अनन्त काल से जाती रही। अतएव आप की उस स्मृति से हीन प्राणियों को अमृत के समान जो आप का भजन है वह तो विष के समान त्याज्य और जो लौकिक विषय सुख विष के समान हेय है वह अमृत के समान ग्राह्य प्रतीत हो रहा है, परन्तु आप तो समस्त देहधारियों की पराम्बा कही जाती हैं अतएव अपने मातृ-कर्त्तव्यानुसार कब मुझे आप इस जीवन में अपने कृपाकटाक्ष की प्राप्ति का पात्र बना लेने की कृपा करेंगी ?

त्वदीयकल्पनागता महाविमोहकारिणी
सुखप्रदा मनोरमाऽभितो विचित्ररूपिणी ।
गतोपमा सुविस्तृतेयमस्ति सृष्टिरेव ते ।
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥१०॥

हे श्री किशोरी जी ! आप की यह सृष्टि बहुत विस्तार वाली, उपमा रहित, सब ओर से विचित्र रूप वाली, मनोहारिणी, सुखदायिनी एवं महा मोह (परमासक्ति) कराने वाली है और जब तक आप का संकल्प है तब तक इस का अस्तित्व अमर है। ऐसी अवस्था में इस से विमुख हो ज्ञान, वैराग्य, भक्ति आदि साधनों द्वारा मैं आप को कदापि प्राप्त नहीं कर सकता अतएव अपनी ही सहज कृपा के वशीभूत हो कर कब आप मुझको अपने कृपाकटाक्ष की प्राप्ति का पात्र बनाने की कृपा करेंगी ?

अनन्तदेहिनां कथं भवश्च पालनं भवेत्
कथ हि रक्षणं तथा विरोधिसङ्गितो वत ।
इदं हि शक्तिगौरवं त्वदद्भुतं प्रतीयते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥११॥

हे श्री किशोरी जी ! जगत् में देहधारियों का कोई अन्त नहीं इन सब की कैसे उत्पत्ति होती है और कैसे पालन होता है ? तथा इन की रक्षा कैसे हो जाती है ? क्योंकि इन के संग ही विरोधियों का वास रहता है अर्थात् जहाँ मूसा, या मेढ़क रहते हैं वहाँ सर्प, । जहाँ सर्प रहते हैं, वहाँ नेवला तथा मोर । जहाँ मृग रहते हैं वहीं व्याघ्रादि । फिर भी रक्षा होती है यही आप की शक्ति का अद्भुत चमत्कार प्रतीत होता है। उसी अपनी सर्वसमर्थ शक्ति के द्वारा कब आप मुझ अयोग्य को भी अपने कृपाकटाक्ष की प्राप्ति का पात्र बनाने की कृपा करेंगी ?

यदंशसम्भवाश्चतुर्मुखास्त्रिलोचनादयो
जगत्प्रधाननायकाः सदा निदेशपालकाः ।
असुप्रिया त्वमेव तत्प्रियस्य पङ्कजेक्षणे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥१२॥

चारमुख ब्रह्मा, त्रिलोचन शिव जी आदि जगत् के प्रधान नायक, जिनके अंश से अवतरित हो प्राप्त आज्ञा का सदा पालन करते रहते हैं, आप उन प्राण प्यारे भगवान् श्री राम जी की प्राण प्यारी हैं। हे कमललोचने श्री किशोरी जी ! कब आप मुझ को अपने कृपाकटाक्ष की प्राप्ति का पात्र बनाने की कृपा करेंगी?

कृपानुभूतिरस्तु मे यथा हि तेऽनपायिनी
सुखे सुखेतरे जये पराजये हि सर्वदा ।
ययाऽनुरागनिर्भरो भवामि ते पदाब्जयोः
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥१३॥

हे श्री किशोरी जी ! जिस को पाकर मैं आपके युगल चरण कमलों के अनुराग से पूर्ण सम्पन्न हो जाऊँ वह सुख में, दुःख में, जय व पराजय आदि सभी अवस्था में आप की कृपा की अविचल अनुभूति जिस प्रकार से मुझे प्राप्त हो जाय ऐसे कृपाकटाक्ष की प्राप्ति का पात्र मुझे कब आप बनाने की कृपा करेंगी ?

प्रमोदकाननेश्वरी प्रसीद रामवल्लभे !
त्वमेव मे परा गतिः समस्तशोकहारिणी ।
उपेक्ष्य दोषसञ्चयं ममाश्रितैकवत्सले !
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥१४॥

हे प्रमोदवन की स्वामिनी श्रीरामवल्लभा श्री किशोरी जी आप मुझपर प्रसन्न हों, क्योंकि समस्त शोकों का हरण करने वाली आप हीं मेरी परम आधार व रक्षा करने वाली हैं। आश्रितों पर सब से अधिक वात्सल्य भाव रखने वाली हे श्री किशोरी जी ! मेरी दोषराशि की ओर न देख कर कब आप मुझको अपने कृपाकटाक्ष की प्राप्ति का पात्र बनाने की कृपा करेंगी ?

दयावती क्षमावती भवादृशी धरासुते !
न काऽप्यभूज्जगत्त्रये न जातुचिद्भविष्यति।
विनिश्चयस्य सिद्धयेऽस्य हृत्स्थितस्य सन्नुते
कदा कारिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥१५॥

हे सन्तों के द्वारा स्तुति की गयी भूमि-नन्दिनी श्री किशोरी जी ! तीनों लोकों में आपके समान न दयावती, न क्षमावती कोई भी हुई है और न कभी होगी ही। मेरे हृदय में इस स्थित दृढ़ निश्चय को सिद्ध करने के लिये कब आप मुझको अपने कृपापूर्णकटाक्ष की प्राप्ति का पात्र बनाने की कृपा करेंगी ?

न कश्चिदस्ति भूतले स यश्च नापराध्यति
त्विदं हितावकं मतं परं मनोबलप्रदम्।
तदेव नः परायणं तदाश्रयं समागतं
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥१६॥

हे श्री किशोरी जी ! पृथ्वी पर ऐसा कोई नहीं है जो कुछ न कुछ अपराध न करता हो। आप का यह सर्वोत्कृष्ट सिद्धान्त मनको परम बल प्रदायक है और वही हम सब साधनहीन पतित जीवों के लिये महान् अबलम्ब है। उसी सिद्धान्त की शरण में आये हुये मुझ अनन्त अपराधी को भी कब आप अपने कृपाकटाक्ष की प्राप्ति का पात्र बनाने की कृपा करेंगी ?

२. श्रीरामकृपाकटाक्षस्तोत्रम्

ब्रह्मार्थितो भूमिभरक्षयाय
भयप्रदानाय निजाश्रितेभ्यः ।
यो भारतेऽस्मिन्कृपयाऽवतीर्णः
कृपाकटाक्षं मयि संविदध्यात् ॥१॥

जो भूमि का भार हरण करने तथा अपने आश्रितों को अभय प्रदान के लिये केवल अपनी कृपा के परवश होकर इस भारतवर्ष में अवतीर्ण हुये, वे श्री राघवेन्द्र सरकार मुझ अकिञ्चन के प्रति अपना कृपाकटाक्ष करने की कृपा करें ।

यस्यावलोक्यातिललामलीला
आनन्दमग्नौ पितरावजस्त्रम् ।
सत्यौकसां प्राणपरप्रियोऽसौ
कृपाकटाक्षं मयि संविदध्यात् ॥२॥

श्री कौशल्या अम्बा तथा श्री दशरथ जी महाराज जिन की लीलाओं का दर्शन करके सदैव आनन्द-मग्न बने रहते हैं, जो श्री अयोध्यावासियों के लिये प्राणों से अधिक प्यारे हैं, वे श्री रामभद्र जी मुझ असमर्थ के प्रति पूर्ण रूपसे अपना कृपाकटाक्ष करने की कृपा करें ।

लीलाः समस्ताः सुखशान्तिवृद्ध्यै
कर्त्तव्यबोधाय मिथोऽखिलानाम् ।

सम्बन्धिनां यत्स निरस्तमायः
कृपाकटाक्षं मयि संविध्यात् ॥३॥

प्राकट्य-काल से लेकर दिव्यधाम प्रस्थान पर्यन्त जिनकी सभी लीलायें (पिता-पुत्र, माता-पुत्र, भाई-भाई, पति-पत्नी, मित्र-मित्र, सेव्य-सेवक, गुरु-शिष्य, शरण्य-शरणागत, शासक-शास्य आदि) सभी सम्बधियों को सुख और शान्ति की वृद्धि तथा एक-दूसरे के प्रति कर्त्तव्य बोध कराने के लिये आदर्श रूप हैं। जो त्रिगुणात्मिका माया के बन्धन से सर्वथा अछूते हैं वे भगवान् श्री रामभद्र जी मुझ अकिञ्चन के प्रति पूर्णरूप से अपना कृपाकटाक्ष करने की कृपा करें।

यच्चेष्टितं ब्रह्महरीश्वराद्या
विदुर्न देवा मुनयो यतीन्द्राः।
स सत्यसङ्कल्प उदारधामा
कृपाकटाक्षं मयि संविदध्यात् ॥४॥

ब्रह्मा, विष्णु, महेशादि प्रमुख देव गण तथा बड़े-बड़े मुनिराज, यतिराज भी जिनकी चेष्टा का भाव नहीं समझ पाते, जिनका संकल्प कभी मिथ्या होता ही नहीं और जिनका धाम उदार (बिना साधन विशेष के ही योगि-दुर्लभ शाश्वत सुख स्वरूप श्री भगवान् को ही यथेष्ट रूप में प्राप्त करा देने वाला) है, वे श्री रामभद्र जी मुझ दीन-हीन के प्रति अपनी कृपा-कोर फेरने की पूर्ण कृपा करें।

यन्नामलीलागुणरूपधाम
व्याख्यापयन्तः कवयो मुनीद्राः।
विराममिच्छन्ति न जातुचित्स
कृपाकटाक्षं मयि संविदध्यात् ॥५॥

जिनके नाम, रूप, लीला, धाम का वर्णन करते हुये कवि, मुनिनायक-वृन्द; कभी विश्राम लेने की इच्छा नहीं करते, वे सर्वाङ्गमनोहारी प्रभु श्री रामभद्र जी मुझ सर्वसाधनहीन पतित के प्रति अपना पूर्ण कृपा कटाक्ष फेरने की कृपा करें।

यदद्भुतं रूपमतुल्यशोभं
यन्नाम सर्वाघहरं प्रसिद्धम्।
स जानकीजानिरनन्तदाता
कृपाकटाक्षं मयि संविदध्यात् ॥६॥

जिनका स्वरूप सभी को आश्चर्य में डुबा देने वाला है और जिनकी शोभा की तुलना किसी के रूप से नहीं दी जा सकती तथा जिनका 'राम' यह नाम सभी पापियों से पापियों के भी सम्पूर्ण पापों को हरण करने में प्रसिद्ध हैं, वे अनन्तदानी श्रीजानकीवल्लभ लाल जी मुझ पतित के प्रति अपना पूर्ण कृपाकटाक्ष करने की कृपा करें।

यशो यदीयं परमं पवित्रं
कवीश्वरैर्गीतमुदारबुद्ध्या।
स पुण्यकीर्त्तिर्भुवनाभिरामः
कृपाकटाक्षं मयि संविदध्यात् ॥७॥

श्री वाल्मीकि जी, श्री अगस्त्य जी, श्री लोमश जी तथा श्री व्यास जी आदि कवीश्वरों ने जिनके परम पवित्र यश को अपनी उदार बुद्धि से गाया है। सम्पूर्ण पुण्यमय जिनकी कीर्त्ति है, जो अपने चरित, गुण एवं स्वरूप के द्वारा सारे विश्व को सुख देने वाले हैं वे भगवान् श्री रामभद्र जी मुझ अकिञ्चन के प्रति अपना कृपाकटाक्ष पूर्ण रूप से करने की कृपा करें।

शरन्मृगाङ्काभमुखाब्जनेत्र-
प्रसक्तदृष्टिः कथयंश्चरित्रम्।

वाल्मीकिरास्ते यदसौ मनोज्ञः
कृपाकटाक्षं मयि संविदध्यात् ॥८॥

जिनके चरित्रों को वर्णन करते हुये महर्षि श्री वाल्मीकि जी की दृष्टि सदैव जिनके शरद् ऋतु के चन्द्रमा के समान उज्ज्वल प्रकाशमय परमाह्लादकारी, श्री मुखारविन्द तथा कमल के समान नेत्रों पर आसक्त बनी हुई है, वे मुनिमनोहरण सरकार श्रीरामभद्र जी मुझ दीन-हीन पर अपना कृपाकटाक्ष पूर्ण रूप के करने का कृपा करें।

अमोघवीर्योऽमितविक्रमश्चा-
मोघक्रियोऽनन्तविवेकशक्तिः।
स दीनबन्धुः करुणैकसिन्धुः
कृपाकटाक्षं मयि संविदध्यात् ॥९॥

जिनकी वीरता कभी निष्फल नहीं जाती और जिनके पराक्रम का कोई पार नहीं जिनकी सभी क्रियायें अमोघ और जिनकी ज्ञानशक्ति असीम है, वे दीनबन्धु करुणा के महासागर भगवान् श्रीरामभद्र जी मुझ सब साधन-हीन-दीन पर अपना कृपाकटाक्ष पूर्ण रूप से करने की कृपा करें।

यस्मात्समो नास्त्यधिकः कुतोऽन्यो
गुणेषु शक्तौ न च बुद्धियोगे।
स सर्वधर्माचरणैर्विहीने
कृपाकटाक्षं मयि संविदध्यात् ॥१०॥

बुद्धियोग, शक्ति तथा गुणों में जिनके समान ही जब कोई अन्य नहीं है तब उनसे बढ़कर भला कोई और कैसे हो सकता है? वे दयालु प्रभु श्री रामभद्र जी सम्पूर्ण धर्माचरणों से हीन मुझ दीन के प्रति अपना कृपाकटाक्ष पूर्ण रूपेण करने की कृपा करें।

अनन्तलोकालययूथनाथो
ब्रह्मेन्दिरानाथशिवादिवन्द्यः ।
स विश्वनाथोऽवनिजासुनाथः
कृपाकटाक्षं मयि संविदध्यात् ॥११॥

जो अनन्त ब्रह्माण्ड-समूहों के स्वामी ब्रह्मा, विष्णु, महेशादि देव मुख्यों के प्रणम्य हैं, वे विश्वनाथ, भूमिनन्दिनी श्रीजानकी जी के प्राणनाथ श्री रामभद्र जी मुझ दीन के ऊपर अपना कृपाकटाक्ष पूर्ण रूप से करने की कृपा करें।

भक्तिप्रियो भक्तमनोविहारी
भावानुसारी भजतामतर्क्यः ।
भक्तेश्वरो भक्तसुरद्रुमाङ्घ्रिः
कृपाकटाक्षं मयि संविदध्यात् ॥१२॥

जिनको भक्ति महाराणी परम प्यारी हैं अतएव जो भक्तों के मन में सदैव विहार करते हैं तथा तर्क-शक्ति से परे होते हुये भी जो भक्तों के भाव का अनुसरण करते रहते हैं और भक्तों के ही सदा शासन में रहते हैं, जिनके श्री चरण कमल कल्पवृक्ष के समान भक्तों के सर्व मनोरथ-पूरक हैं, वे श्री रामभद्र जी मुझ अधम के प्रति अपना कृपाकटाक्ष करने की पूर्ण कृपा करें।

भक्तानुकारी प्रणतानुसारो
प्रियाविहारी जनदुःखहारी ।
रामोऽभिरामो भगवानघारिः
कृपाकटाक्षं मयि संविदध्यात् ॥१३॥

जो भक्तों की चेष्टा का अनुकरण करने वाले शरणागत भक्तों के अनुगामी व श्री प्रियाजी के साथ आनन्द विहार करने वाले, एवं अपने आश्रितों

के सभी दुःख हारक हैं वे सर्वपापनाशक, सर्वसुखद, षड्ऐश्वर्य्यसम्पन्न भगवान् श्री रामभद्र जी मुझ दीन के प्रति अपना कृपाकटाक्ष डालने की पूरी कृपा करें।

यः कौशिकस्य क्रतुरक्षणेन
सिद्धाश्रम वीतभयं चकार।
विभज्य चापं श्रियमाप्तवान्स
कृपाकटाक्षं मयि संविदध्यात् ॥१४॥

जिन्होंने श्री विश्वामित्र महाराज के यज्ञ रक्षण के द्वारा वहाँ के सिद्धाश्रम को निर्भय बना दिया, और श्री मिथिला जी पधार कर भगवान् शिव द्वारा प्रदत्त पिनाक धनुष को तोड़कर अपनी अनपायिनी शक्ति श्री जनक राजदुलारी जी को प्रत्यक्ष रूप में प्राप्त किया, वे अतुलित बल राशि भगवान् श्री राम जी मुझ दीन-हीन अकिंचन के प्रति अपना कृपाकटाक्ष डालने की पूर्ण कृपा करें।

वितत्रसुर्नैर्ऋतयूथमुख्या
भयान्वितोऽब्धिः शरणं जगाम।
पराक्रमं प्रेक्ष्य यदद्भुतं सः
कृपाकटाक्षं मयि संविदध्यात् ॥१५॥

जिनके महान् आश्चर्यकारी पराक्रम को देखकर राक्षस दल के मुखिया रावण कुम्भकर्णादि भी विशेष त्रास को प्राप्त हुये और डर के मारे समुद्र भी जिनकी शरण में आ गया, वे पराक्रमशाली भगवान् श्री रामभद्र जी मुझ दीन पर अपना कृपाकटाक्ष करने की पूर्ण कृपा करें।

कारुण्यरूपा सुषमैकमूर्त्तिः
क्षमाद्वितीया श्रुतिगीतकीर्त्तिः।

यद्वल्लभा दीनपरायणाऽसौ
कृपाकटाक्षं मयि संविदध्यात् ॥१६॥

करुणा रस स्वरूपा, अनुपम सौन्दर्य्य की मूर्त्ति, अतुलित क्षमा गुण सम्पन्ना, वेद भगवान् जिनकी कीर्त्ति का गान करते हैं, जो साधनहीन दीन जीवों की एकमात्र आधार हैं वे श्री जनकराजदुलारी जी जिनकी प्राण-वल्लभा हैं वे श्री रामभद्र जी मुझ अकिंचन के प्रति अपना कृपापूर्ण कटाक्ष सम्यक् रूप से डालने की कृपा करें ।

----

३. श्रीयुगलकृपानुभूतिस्तोत्रम्

श्रीदौ समस्तजगतां श्रिय आश्रयौ यौ
श्रीरूपिणौ च कृपया धृतदिव्यदेहौ ।
वात्सल्यसिन्धुमहितौ करुणावतारौ
श्रीजानकीरघुवरौ शरणं मम स्ताम् ।। १ ।।

जो समस्त जगत् को शोभा, तेज तथा वैभव प्रदान करते हैं और अपने भक्तों के लिये जो जगत् की सम्पूर्ण अभीष्ट श्री (शोभा कान्ति) एवं वैभव के प्रदाता हैं एवं जो समस्त शोभा कान्ति व सम्पत्ति के स्वरूप होते हुये भी अपनी अहैतुकी कृपा के वशीभूत होकर लोकोत्तर मङ्गलमय स्वरूप को धारण करते हैं, जिनके वात्सल्य की महानता को देखकर वात्सल्य-सागर भी अपने को तुच्छ मानकर श्रद्धावनत हो उनकी पूजा करता है तथा जो करुणा के अवतार हैं, वे श्री जानकी जी तथा श्री रघुनन्दन प्यारे युगल-सरकार हमारे सब प्रकार से रक्षक रहें ।

सीदन्तमीक्ष्य भवसिन्धुतरङ्गजालै-
रुत्तारणाय ददतं नरदेहपोतम् ।
यौ मे निसर्गकृपया परया परीतौ
तौ जानकीरघुवरौ शरणं मम स्ताम् ।।२।।

संसाररूपी समुद्र-तरङ्ग; समूहों से व्याकुल होते देखकर जिन्होंने अपनी कारण रहित स्वाभाविक कृपा से युक्त होकर उनसे पार लगाने के लिये मुझे मनुष्य शरीर रूपी जहाज प्रदान किया है, वे श्री जानकी जी तथा श्री रघुवर प्यारे युगल-सरकार हमारे सर्वदा रक्षक बने रहें ।

ताराधिपाभवदनौ जठरे जनन्याः
संरक्षकौ भरणपोषणकारिणौ च ।
यौ वै कृपैकवशगौ जगदेकलीलौ
श्रीजानकीरघुवरौ शरणं मम स्ताम् ॥३॥

सारा जगत् ही जिनकी प्रत्यक्ष अनुपम लीला है जो अपनी अतुलित कृपा के वशीभूत हो कर माँ के गर्भ में हमारा संरक्षण तथा भरण-पोषण करते रहे, वे चन्द्रमा के समान परमप्रकाशमय, आह्लाद-प्रदायक मुख वाले श्री जानकी जी तथा श्री रघुवर प्यारे युगल-सरकार हमारे सर्वदा रक्षक बने रहें।

रातः समस्तसुविधां कृपया परीता
वामृत्युजन्मत इहात्तविभिन्नरूपौ ।
देहं प्रदाय सकलावयवैरुपेतं
तौ जानकीरघुवरौ शरणं मम स्ताम् ॥४॥

जो अपनी अहैतुकी कृपा के वशीभूत हो कर सम्पूर्ण आवश्यक अंगों से युक्त शरीर को प्रदान करके स्वयं माता-पिता, बन्धु, मित्र कलत्र, पुत्र, पौत्रादि के स्वरूपों को धारण करके जन्म से लेकर मृत्यु पर्य्यन्त हमें सब प्रकार की सुविधा प्रदान करते रहते हैं वे जगज्जननी श्री जानकी जी तथा श्री रघुनन्दन प्यारे युगल सरकार सभी अवस्था में हमारे संरक्षक रहें।

मौढ्यं ह्युपेक्ष्य स्वपतो मम जाग्रतश्च
क्षेमाय यौ सततमेव सुजागरूकौ ।
सम्बन्धिनो ययोः साम्यमनाप्तुमर्हा-
स्तौ जानकीरघुवरौ शरणं मम स्ताम् ॥५॥

मेरी मूढ़ता की ओर ध्यान न देकर सोते तथा जागते, सभी अवस्था में हमारे कल्याण के लिये जो भली प्रकार से जागते रहते हैं।, कोई भी माता-पिता, सुहृद आदि सम्बन्धी हितेहा तथा लालन, पालन आदि कार्यों में जिनकी समानता करने को कभी भी समर्थ नहीं हो सकते वे जगज्जननी श्री जानकी जी तथा जगत्पिता श्री रघुवर प्यारे युगल-सरकार हमारी सर्वदा रक्षा करें।

वन्द्यौ समस्तविबुधर्षिमुनीन्द्रवर्य्यै-
रादर्शचारुचरितैः श्रुतिभिर्नुतौ यौ।
सृष्टिस्थितिप्रलयकारणमद्वितीयौ
तौ जानकीरघुवरौ शरणं मम स्ताम् ॥६॥

जो अनन्त ब्रह्माण्डों की सृष्टि, पालन, तथा प्रलय के अद्वितीय कारण हैं तथा जो आदर्शपूर्ण मनोहर चरितों की विशेषता से समस्त देवऋषि व मुनि श्रेष्ठों के द्वारा सर्वदा प्रणाम करने योग्य हैं तथा सभी वेद जिनकी स्तुति करते हैं वे श्री जानकी जी तथा श्री रघुनन्दन प्यारे युगल सरकार हमारे सर्वदा सहायक बने रहें।

देवेन्द्रभानुपवनाग्निविधत्रनेत्रा-
हीशादयः सततमेव ययोनदेशम्।
मूर्ध्ना वहन्त कृपया जगदेकबन्धू
तौ जानकीरघुवरौ शरणं मम स्ताम् ॥७॥

देवराज इन्द्र, भगवान् भास्कर वायु, अग्नि, ब्रह्मा, त्रिनेत्रधारी शिव तथा शेष जी आदि प्रमुख देव नायक भी जिनकी आज्ञा को शिर पर धारण किये रहते हैं, वे स्थावर-जंगम सभी जीवों के अनुपम हितकारी बन्धु श्री जानकी जी तथा रघुवर प्यारे जू अपनी केवल अहैतुकी कृपा के वश होकर मेरी सदैव रक्षा करें।

हं तु त्रितापमनशं परिचिन्त्यपादौ
सर्वेश्वरौ नखिलगौ कृपयैकया यौ ।
सञ्चालकौ सकलदेहभृदिन्द्रियाणां
तौ जानकीरघुवरौ शरणं मम स्ताम् ॥८॥

दैहिक-दैविक तथा भौतिक तीनों प्रकार के तापों की निवृत्ति के लिये जिनके श्री च ण कमलों का चिन्तन ही सर्वोपरि अमोघ साधन है। जो छोटों से छोटों और बड़ों से बड़ों के स्वामी अर्थात् सभी को अपने नियन्त्रण में रखने वाले, सभी में एवं सर्वत्र समाये हुये, केवल अपनी अनुपम अहैतुकी कृपा के वशीभूत होकर समस्त देहधारी कीट पतङ्ग से लेकर ब्रह्मा शिवादि सृष्टिकष्ट नायकों पर्यन्त देव प्रमुखों की भी सभी इन्द्रियों का जो सञ्चालन करते रहते हैं वे जगज्जननी श्री जानकी जी तथा रघुकुलश्रेष्ठ प्यारे श्री रामभद्र जी (युगल सरकार) सदैव जन्म-जन्मान्तर पर्य्यन्त हमारे रक्षक बने रहें।